International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 25-03-2019; Accepted: 28-04-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 3; May 2019; Page No. 28-29

वर्तमान युग के सामाजिक जीवन में गांधी विचारधारा की आवश्यकता

Dr. Chiluka Pusphala
Department of Hindi, Mount Carmel College Autonomous Bangalore, Karnataka, India

प्रस्तावना

मानव जीवन एक अविभाजित इकाई है, इसलिए उसके विभिन्न पक्षों के बीच विभाजन रेखा कभी नहीं खींची जा सकती - नीतिशास्त्र और राजनीति के बीच भी नहीं | जो व्यापारी धोखाधड़ी करके धन कमाता है वह अगर यह समझे कि इस काली कमाई के एक अंश को तथाकथित धार्मिक प्रयोजनों पर खर्च करके वह अपने पापों लें मुक्त हो जाएगा तो वह स्वयं को ही धोखा देता है | मनुष्य का दैनंदिन जीवन उसके आध्यात्मिक स्वरूप से कभी अलग नहीं किया जा सकता |

आज मनुष्य के कार्यकलाप का संपूर्ण विस्तार एक अखंड इकाई है | आप सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शुध्द धार्मिक कार्यों को अलग- अलग चौखटों में नहीं बाँध सकते | धर्म अन्य सभी कार्य कलाप को नैतिक आधार प्रदान करता है ; एसा न हो तो वे नैतिक आधार से वंचित हो जाएँगे और उस सूरत में, जीवन निरर्थक शेरपा उन्माद की एक भूलभुलैया बनकर रह जाएगा |

राजनीति का सरोकार राष्ट्रों से है और जिस चीज का सरोकार राष्ट्रों के कल्याण से हो, वह धार्मिक प्रवृत्ति वाले अर्थात् ईश्वर और सत्य की खोज करने वाले व्यक्ति के सरोकार की चीज अवशय होनी चाहिए|वस्तुतः हमारा प्रत्येक कार्य धर्म से व्याप्त होना चाहिए | यहाँ धर्म का आशय संप्रदायवाद से नहीं है | उसका आशय विश्व के व्यवस्थित नैतिक शासन से है | यह अगोचर है, इसलिए अवास्तविक नहीं है |यह धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म आदि सबको परिव्याप्त करता है | यह इनमें समस्वरता लेता है और उन्हें वास्तविकता प्रदान करता |

अंतर्जातीय विवाह और अंतर्जातीय भोज

यधपि वर्णाश्रम में अंतर्जातीय विवाह और अंतर्जातीय भोज पर कोई पाबंदी नहीं है पर इसमें कोई बाध्यता लागू नहीं की जा सकती | मानव कहाँ शादी करे और किसके साथ भोजन करे, इसका फैसला करने के लिए उसे आजाद छोड़ देना चाहिए | आर्थिक दृष्टि से, एक जमाने में जाति का बड़ा महत्व था | इससे पैतृक कौशल की रक्षा होती थी और प्रतियोगिता मर्यादित रहती थी | यह कंगाली को दूर रखने का सर्वोत्तम उपाय था | उसमें व्यापार श्रेणियों के सभी लाभ थे | यधपि इससे साहस अथवा अविष्कार को बढ़ावा नही मिलता था, पर यह भी नहीं कहा जा सकता कि यह उनके मार्ग में बाधक थी.....

एतिहासिक दृष्टि से, जाति - व्यवस्था को भारतीय समाज की प्रयोगशाला में मनुष्य का प्रयोग या सामाजिक समंजन कहा जा सकता है | यदि हम इसे सफल सिध्द कर सकें तो इसे संसार को उसकी काया पलटने , निर्मम प्रतियोगिता को समाप्त करने और धनलोलुपता तथा लालच से उत्पन्न होने वाले सामाजिक विघटन को रोकने के सर्वोत्तम साधन के रूप में पेश कर सकते हैं | जाति भेद ने हमारे अंदर इतनी गहरी जड़ें जमा ली हैं कि उससे भारत के मुसलमान, ईसाई और अन्य धर्मावलंबी भी कुप्रभावित हो गए हैं | वैसे, जातिगत अवरोध कमाेबेश मात्रा में दुनिया के अन्य भागों में भी पाए जाते हैं | इसका अर्थ यह है कि इस बिमारी से पूरी मानव जाति ग्रस्त है | इसे सच्चे अर्थ में धर्म की स्थापना करके ही दूर कियाजा सकता है| मुझे किसी धर्म के ग्रंथों में एसे अवरोधों और भेदभावों का विधान नहीं मिला |

धर्म की दृष्टि में सभी मनुष्य बराबर हैं | विधा, बुध्दि या धन के कारण कोई व्यक्ति अपने को उनसे श्रेष्ठ होने का दावा नहीं कर सकता जिनके पास इनका अभाव है | यदि कोई व्यक्ति सच्चे धर्म के शुचिकारी तत्व और अनुशासन से आप्लावित और पवित्रकृति है तो उसे चाहिए कि अपने से कम भाग्यशाली लोगों के साथ अपने लाभों को बाँटने का दायित्व निभाए |

अहिंसा मानवता को उपलब्ध सबसे बड़ा बल है | मनुष्य ने अपनी होशियारी से विनाश के जो शक्तिशाली - से - शक्तिशाली अस्त्र म शस्त्र बनाए हैं, अहिंसा उनसे भी अधिक शक्तिशाली है | विनाश मानवों का नियम नहीं हैं |अपने जीवन ध्येय में अदम्य आस्था से प्रेरित दृढ़ संकल्प वाले मुट्ठी भर लोग इतिहास का रूख बदल सकते हैं | अहिंसा एक विज्ञान है | विग्यन के शब्दकोश में असफलता का कोई स्थान नहीं होता | अपेक्षित परिणाम को प्राप्त करने की असफलता प्राया: नयी खोजें की पूर्वगामी सिध्द होती हैं |पाप से घृणा करो, पापी से नहीं, एक एसा नीतिवचन है जिसे समझना तो काफी आसान है, पर जिस पर आचरण शायद ही कभी किया जाता है | इसलिए दुनिया में घृणा का विष फैलता चला जा रहा है |मनुष्य और उसका कर्म, दो अलग - अलग चीजें हैं| जहाँ सत्कर्म का अनुमोदन किया जाना चाहिए और कुकर्म की निंदा की जानी चाहिए, वहीं उनका कर्ता , चाहे वह भला आदमी हो या दृष्ट, सदैव यथास्थिति, आदर अथवा दया का पात्र होता है |

दलित आंदोलन और निश्चय दिवस

१९३२ में, दलित नेता और प्रकांड विद्वान डॉ॰ बाबासाहेब अम्बेडकर के चुनाव प्रचार के माध्यम से, सरकार ने अछूतों को एक नए संविधान के अंतर्गत अलग निर्वाचन मंजूर कर दिया। इसके विरोध में दलित हतों के विरोधी गांधी जी ने सितंबर १९३२ में छ: दिन का अनशन ले लिया जिसने सरकार को सफलतापूर्वक दलित से राजनैतिक नेता बने पलवंकर बालू द्वारा की गई मध्यस्ता वाली एक समान व्यवस्था को अपनाने पर बल दिया। अछूतों के जीवन को सुधारने के लिए गांधी जी द्वारा चलाए गए इस अभियान की शुरूआत थी। गांधी जी ने इन अछूतों को हरिजन का नाम दिया जिन्हें वे भगवान की संतान मानते थे। ८ मई १९३३ को गांधी जी ने हरिजन आंदोलन में मदद करने के लिए आत्म शुद्धिकरण का २१ दिन तक चलने वाला उपवास किया। यह नया अभियान दलितों को पसंद नहीं आया तथापि वे एक प्रमुख नेता बने रहे। डॉ॰ अम्बेडकर ने गांधी जी द्वारा हरिजन शब्द का उपयोग करने की स्पष्ट निंदा की, कि दलित सामाजिक रूप से अपरिपक्व हैं और सुविधासंपन्न जाति वाले भारतीयों ने पितृसत्तात्मक भूमिका निभाई है। अम्बेडकर और उसके सहयोगी दलों को भी महसूस हुआ कि गांधी जी दलितों के राजनीतिक अधिकारों को कम आंक रहे हैं। हालांकि गांधी जी एक वैश्य जाति में पैदा हुए फिर भी उन्होनें इस बात पर जोर दिया कि वह डॉ॰ अम्बेडकर जैसे दलित मसिहा के होते हुए भी वह दलितों के लिए आवाज उठा सकता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में हिन्दुस्तान की सामाजिक बुराइयों में में छुआछूत एक प्रमुख बुराई थी जिसके के विरूद्ध महात्मा गांधी और उनके अनुयायी संघर्षरत रहते थे। उस समय देश के प्रमुख मंदिरों में हरिजनों का प्रवेश पूर्णतः प्रतिबंधित था। केरल राज्य का जनपद त्रिशुर दक्षिण भारत की एक प्रमुख धार्मिक नगरी है। यहीं एक प्रतिष्ठित मंदिर है गुरुवायुर मंदिर, जिसमें कृष्ण भगवान के बालरूप के दर्शन कराती भगवान गुरूवायुरप्पन की मूर्ति स्थापित है। आजादी से पूर्व अन्य मंदिरों की भांति इस मंदिर में भी हरिजनों के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबंध था।

केरल के गांधी समर्थक श्री केलप्पन ने महात्मा की आज्ञा से इस प्रथा के विरूद्ध आवाज उठायी और अंततः इसके लिये सन् १९३३ ई0 में सविनय अवज्ञा प्रारंभ की गयी। मंदिर के ट्रस्टियों को इस बात की ताकीद की गयी कि नये वर्ष का प्रथम दिवस अर्थात १ जनवरी १९३४ को अंतिम निश्चय दिवस के रूप में मनाया जायेगा और इस तिथि पर उनके स्तर से कोई निश्चय न होने की स्थिति मे महात्मा गांधी तथा श्री केलप्पन द्वारा आन्दोलनकारियों के पक्ष में आमरण अनशन किया जा सकता है। इस कारण गुरूवायूर मंदिर के ट्रस्टियो की ओर से बैठक बुलाकर मंदिर के उपासको की राय भी प्राप्त की गयी। बैठक मे ७७ प्रतिशत उपासको के द्वारा दिये गये बहुमत के आधार पर मंदिर में हरिजनों के प्रवेश को स्वीकृति दे दी गयी और इस प्रकार १ जनवरी १९३४ से केरल के श्री गुरूवायूर मंदिर में किये गये निश्चय दिवस की सफलता के रूप में हरिजनों के प्रवेश को सैद्वांतिक स्वीकृति मिल गयी। गुरूवायूर मंदिर जिसमें आज भी गैर हिन्दुओं का प्रवेश वर्जित है तथापि कई धर्मों को मानने वाले भगवान भगवान गुरूवायूरप्पन के परम भक्त हैं। महात्मा गांधी की प्रेरणा से जनवरी माह के प्रथम दिवस को निश्चय दिवस के रूप में मनाया गया और किये गये निश्चय को प्राप्त किया गया। १९३४ की गर्मियों में, उनकी जान लेने के लिए उन पर तीन असफल प्रयास किए गए थे।

जब कांग्रेस पार्टी के चुनाव लड़ने के लिए चुना और संघीय योजना के अंतर्गत सत्ता स्वीकार की तब गांधी जी ने पार्टी की सदस्यता से इस्तीफा देने का निर्णय ले लिया। वह पार्टी के इस कदम से असहमत नहीं थे किंतु महसूस करते थे कि यदि वे इस्तीफा देते हैं तब भारतीयों के साथ उसकी लोकप्रियता पार्टी की सदस्यता को मजबूत करने में आसानी प्रदान करेगी जो अब तक कम्यूनिसटों, समाजवादियों, व्यापार संघों, छात्रों, धार्मिक नेताओं से लेकर व्यापार संघों और विभिन्न आवाजों के बीच विद्यमान थी। इससे इन सभी को अपनी अपनी बातों के सुन जाने का अवसर प्राप्त होगा। गांधी जी राज के लिए किसी पार्टी का नेतृत्व करते हुए प्रचार द्वारा कोई ऐसा लक्ष्य सिद्ध नहीं करना चाहते थे जिसे राज के साथ अस्थायी तौर पर राजनैतिक व्यवस्था के रूप में स्वीकार कर लिया जाए।

गांधी जी नेहरू प्रेजीडेन्सी और कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के साथ ही १९३६ में भारत लौट आए। हालांकि गांधी की पूर्ण इच्छा थी कि वे आजादी प्राप्त करने पर अपना संपूर्ण ध्यान केंद्रित करें न कि भारत के भविष्य के बारे में अटकलों पर। उसने कांग्रेस को समाजवाद को अपने उद्देश्य के रूप में अपनाने से नहीं रोका। १९३८ में राष्ट्रपति पद के लिए चुने गए सुभाष बोस के साथ गांधी जी के मतभेद थे। बोस के साथ मतभेदों में गांधी के मुख्य बिंदु बोस की लोकतंत्र में प्रतिबद्धता की कमी तथा अहिंसा में विश्वास की कमी थी। बोस ने गांधी जी की आलोचना के बावजूद भी दूसरी बार जीत हासिल की किंतु कांग्रेस को उस समय छोड़ दिया जब सभी भारतीय नेताओं ने गांधी जी द्वारा लागू किए गए सभी सिद्धातों का परित्याग कर दिया गया।

संदर्भ

1. महात्मा गांधी अहिंसा का बल - 147, 148,149,176, 177,